A.B.M. college. Goalmuri, JSR

2nd year INTER

Hindi core 'A'

कवि आलोक धन्वा

कविता पतंग

Ch-05

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर

Q. "सबसे तेज बौछारें गईं, भादो गया" के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

Ans इस कविता में कवि ने प्राकृतिक वातावरण का सुंदर वर्णन किया है। भादो माह में तेज वर्षा होती है। इसमें बौछारें पड़ती हैं। बौछारों के समाप्त होने पर शरद का समय आता है। मौसम खुल जाता है। प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं—

1. सवेरे का सूरज खरगोश की आँखों जैसा लाल-लाल दिखाई देता है।
2. शरद ऋतु के आगमन से उमस समाप्त हो जाती है। ऐसा लगता है कि शरद अपनी साइकिल को तेज गति से चलाता हुआ आ रहा है।
3. वातावरण साफ व धुला हुआ सा लगता है।
4. धूप चमकीली होती है।
5. फूलों पर तितलियाँ मँडराती दिखाई देती हैं।

Q. "जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास" - कपास के बारे में सोचे कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है?

Ans " जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास" - कपास के बारे में विचार करते हुए कह सकते हैं कि कपास से बच्चों का घनिष्ठ संबंध बन सकता है। बच्चों का शरीर कोमल होता है। वे ऐसे लगते हैं मानो वे कपास की नरमी, लोच आदि लेकर ही पैदा होकर दौड़ते हैं, दौड़ते समय उन्हें मकान की छते भी कठोर नहीं लगती। उनके पैरों से छते भी नरम हो जाती हैं। वे पतंग उड़ाते हुए इधर से उधर झूले की पेंग की तरह आगे-पीछे आते-जाते हैं उनके शरीर में डाली की तरह लचीलापन होता है।

इस समय उनका सारा ध्यान पतंग की डोर के सहारे, उसकी उड़ान व ऊँचाई पर ही केंद्रित रहता है। ऐसा लगता है मानो पतंग की ऊँचाईयों ने ही उन्हें केवल डोर के सहारे थाम लिया हो।

Q. आसमान में रंग बिरंगी पतंगो को देखकर आपके मन में कैसे ख्याल आते हैं?

Ans पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं की परिचायिका है। जब पतंग उड़ती है तो बच्चों का मन भी

उड़ता है। पतंग उड़ाते समय बच्चे अत्यधिक उत्साहित होते हैं। पतंग की तरह बालमन भी हिलोरें लेता है। वह भी आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहता है। इस कार्य में बच्चे रास्ते की कठिनाइयों को भी ध्यान में नहीं रखते।

आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को देखकर मेरा मन खुशी से भर जाता है। मैं सोचता हूँ कि मेरे जीवन में भी पतंगों की तरह अनगिनत रंग होने चाहिए ताकि मैं भरपूर जीवन जी सकूँ। मैं भी पतंग की तरह खुले आसमान में उड़ना चाहता हूँ। मैं भी नयी ऊँचाइयों को छूना चाहता हूँ।

8 "महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ" उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं? चर्चा करें।

Ans इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर वर्णन किया है। पतंग बच्चों की उमंग व उल्लास का रंग-बिरंगा सपना है। शरद ऋतु में मौसम साफ हो जाता है। चमकीली धूप बच्चों को आकर्षित करती है। वे इस अच्छे मौसम में पतंगें उड़ाते हैं। आसमान में उड़ती हुई पतंगों को उनका बालमन छूना चाहता है। वे भय पर विजय पाकर बार-बार

कर भी उँगलते रहते हैं। उनकी कल्पनाएँ पतंगों के सहारे आसमान को पार करना चाहती हैं। प्रकृति भी उनका सहयोग करती है। तितलियाँ उनके सपनों की रंगीनी को बढ़ाती हैं।

पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं से जुड़ी होती है। पतंग आकाश में उड़ती है, परंतु उसकी ऊँचाई का नियंत्रण बच्चों के हाथ की डोर में होता है। बच्चे पतंग की ऊँचाई पर ही ध्यान रखते हैं। वे स्वयं को भूल जाते हैं। पतंग की बढ़ती ऊँचाई से बालमन और अधिक ऊँचा उड़ने लगता है। पतंग का धागा पतंग की ऊँचाई के साथ-साथ बालमन को भी नियंत्रित करता है।

Q. बच्चों को छतों के खतरनाक किनारों से पीटने से कौन बचाता है?

Ans बच्चों को छतों के खतरनाक किनारों से पीटने से उनके रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है।

Q. एक धागे के सहारे पतंगें क्या कर रही हैं?

Ans एक धागे के सहारे पतंगें खुले आकाश में चढ़ती ऊँचाइयों पर उड़ रही हैं।

Scanned with CamScanner

Q. किनके बेचैन पैरों के पास घूमती हुई पतंग आती है?

Ans पतंग उड़ाते हुए बच्चों के बेचैन पैरों के पास घूमती हुई पतंग आती है।

Q. किसकी नाजुक दुनिया है?

Ans तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया है।

Q. पतंग उड़ाते समय के दृश्य का वर्णन करो?

Ans पतंग उड़ाते समय बच्चे अति उत्साहित होकर सीटियाँ बजाते हैं, किलकारियाँ भरते हैं व पेंच लड़ाते के लिए आतुर दिखायी देते हैं।

Q. दिशाओं को मृदंग की तरह कौन बजाते हुए पेंग भरते चले आते हैं?

Ans दिशाओं को मृदंग की तरह उड़ाते, तितलियों के सदृश बच्चे पेंग भरते चले आते हैं।

Q. "प्रात: काल की शोभा" के लिए कवि ने किस विशेषण का उल्लेख किया है?

Ans "प्रात: काल की शोभा" के लिए कवि ने खरगोश की आँखों जैसी लालिमा का विशेषण दिया है।

Scanned with CamScanner